संदर्भ समूह सिद्धान्त [मर्टन] (Lower Pcs)

इसका सर्वप्रथम प्रयोग हरबर्ट हाइमैन नामक सामाजिक मनोवैज्ञानिक ने 1942 में किया था (संदर्भ समूह की अवधारणा का) तत्पश्चात कुछ अन्य सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने जैसे शैरिफ व न्यूकाम्ब ने सामूहिक प्रकृति एवं गत्यात्मकता को विश्लेषित करने के लिये इस अवधारणा का प्रयोग किया। The American soldier नामक अत्यधिक चर्चित पुस्तक में भी संदर्भ समूह व्यवहार का विश्लेषण हुआ लेकिन समाजशास्त्र में इस अवधारणा को प्रचालित एवं स्थापित करने का श्रेय मर्टन को दिया जाता है जिन्होंने अपने कुछ लेखों यथा Social structure & social Theory में मर्टन ने संदर्भ समूह व्यवहार को न केवल सुस्पष्ट किया बल्कि उससे सम्बंधित अनेक पक्षों को एक सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत किया। मर्टन के संदर्भ समूह व्यवहार को निम्नलिखित अवधारणाओं व पक्षों के विवेचन से स्पष्ट किया जा सकता है।

समूह, समग्र एवं श्रेणियाँ – मर्टन ने संदर्भ समूह व्यवहार से पूर्व तीन अवधारणाओं को स्पष्ट किया। यह स्पष्टीकरण पारसंस से प्रभावित है

मर्टन के अनुसार श्रेणी (statical category) एक सांख्यिक प्रत्यय है जिसका अभिप्राय व्यक्ति के एक ऐसे संग्रह से है जो किसी बनावटी आधार पर एक प्रकार के वर्ग में रखे जा सकते है जैसे बुजुर्ग, युवा, अनुसूचित जाति एवं जनजाति इत्यादि।

मर्टन के अनुसार संग्रह (collectivity) से अभिप्राय एक ऐसे संग्रह से है जिसके सदस्यों के मध्य प्रत्यक्ष सामाजिक सम्पर्क का अभाव पाया जाता है। लेकिन उनके मध्य एक सामूहिकता की भावना पायी जा सकती है जैसे राष्ट्र या क्षेत्र.

मर्टन के अनुसार समूह एक ऐसा संग्रह है जिसके सदस्यों के मध्य एक निरन्तर प्रत्यक्ष सामाजिक सम्पर्क पाया जाता है जो श्रेणी एवं संग्रह (collectivity) की तुलना में अधिक संगठित होते हुये सामूहिक भावना से ओत प्रोत होते है।

मर्टन का कहना है कि संदर्भ समूह व्यवहार इसी प्रकार के समूह के संदर्भ मे घटित होता है।

मर्टन के अनुसार संदर्भ समूह व्यवहार व्यक्ति के अपने समूह या किसी दूसरे समूह के आदर्शों, मानदंडो व्यवहार करने के तरीकों को संदर्भित करते हुये व्यवहार करने से है।

Scanned with CamScanner

वस्तुतः मर्टन के संदर्भ समूह की व्याख्या हेतु समूह के दो प्रकारों की व्याख्या आवश्यक है।

A - सदस्यता वाला समूह

B - असदस्यता वाला समूह

मर्टन ने चार्ल्स सीमेल व विलियम ग्राहम समनर के अंतः समूह तथा वाह्य समूह या यांत्रिक समूह या बाहरी समूह के विभाजन से प्रभावित होते हुये दो प्रकार के समूहों में समूह का वर्गीकरण किया। उनके अनुसार अंतः समूह या वाह्य समूह की अपेक्षा सदस्यता समूह या असदस्यता समूह अधिक वस्तुपरक विभाजन है। ऐसे समूह जिनका व्यक्ति सदस्य है, अपने व्यवहार को उसी समूह से संदर्भित कर सकता है। दूसरा समूह जिसका वह सदस्य नहीं है, अपने व्यवहार में उसको भी संदर्भित कर सकता है।

मर्टन ने सकारात्मक एवं नकारात्मक संदर्भ समूह व्यवहार माने है। जिसमें व्यक्ति सदस्यता या असदस्यता समूह को संदर्भित करते हुये उसके मूल्यों, मानदंडो आदि से प्रभावित होकर अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है। जबकि नकारात्मक संदर्भ समूह व्यवहार, सकारात्मक व्यवहार के विपरीत एक ऐसा व्यवहार है जिसमें व्यक्ति जिस समूह को संदर्भित कर रहा है उसके आदर्शों मूल्यों मानदंडो के विरोधी प्रतिमानों को अपनाता है।

मर्टन ने इसके अतिरिक्त दो अन्य प्रकार के संदर्भ समूह व्यवहार का उल्लेख किया है।

A - तुलनात्मक संदर्भ समूह व्यवहार

B - अनुकरणात्मक संदर्भ समूह व्यवहार

मर्टन तुलनात्मक संदर्भ समूह व्यवहार को सापेक्षिक वंचना के उदाहरण से स्पष्ट किया है। जब कोई व्यक्ति या समूह अपनी तुलना किसी अन्य व्यक्ति या समूह से करता है और यह अनुभव करता है, कि उसकी तुलना में वह वंचित है तो वह सापेक्षिक वंचना का शिकार हो जाता है। यह सापेक्षिक वंचना अनेक प्रकार के सामाजिक व्यवहारों का कारण है एवं मर्टन के द्वारा प्रस्तावित वह महत्वपूर्ण अवधारणा है जिसका सामाजिक संघर्षों, तनावों एवं सामाजिक गतिशीलता एवं सामाजिक परिवर्तनों के लिये भी किया जाता है लेकिन M.N. श्रीनिवास द्वारा प्रतिपा...

Scanned with CamScanner

एक अनुकरणात्मक संदर्भ समूह का उदाहरण है। जिसमें निम्न जाति के लोग या व्यक्ति द्विज जाति के प्रारुप का अनुकरण करते हैं एवं सामाजिक गतिशीलता के माध्यम से अपने स्तर को परिवर्तित करने का प्रयत्न करते है।

मर्टन ने संदर्भ समूह व्यवहार में तीन प्रकार के संदर्भ का उल्लेख किया है।

संदर्भ बिंदु या प्रारुप – मर्टन का मानना है कि जब व्यवहार में किसी एक व्यक्ति को संदर्भित किया जाता है तो वह संदर्भ व्यक्ति कहा जाता है लेकिन जब किसी व्यक्ति के द्वारा किये जाने वाले अनेक भूमिकाओं के अनुरुप व्यवहार किया जाता है अर्थात व्यक्ति के किसी एक व्यवहार या गुण को नहीं अपनाया जाता बल्कि अनेक व्यवहारों व गुणों को अपनाया जाता है तो उस संदर्भित व्यक्ति को भूमिका प्रारुप (Role model) कहा जाता है।

विचार उत्तम है,

इसी प्रकार यदि किसी भी समूह को सदस्यता या असदस्यता वाले समूह को व्यवहार में संदर्भित किया जाता है तो वह संदर्भ समूह कहलाता है। मर्टन ने इस संदर्भ में सदस्यता वाले व असदस्यता वाले समूहों में संदर्भ समूह बनाने के कारणों एवं परिणामों की भी विवेचना की है।

मर्टन के अनुसार सदस्यता वाले समूह को संदर्भ समूह मुख्य रुप से दीर्घकालीन संगति के कारण बनाया जाता है। दीर्घकालीन संगति के कारण व्यक्ति के अनेक पक्षों को सदस्यता वाला समूह प्रभावित करता है। लेकिन शक्ति सत्ता प्रतिष्ठा अर्जित करने हेतु व्यक्ति अक्सर असदस्यता वाले समूह को संदर्भ समूह बनाते है। स्पष्टत: जिसका परिणाम सापेक्षिक वंचना तत्पश्चात सामाजिक गतिशीलता हो सकती है।

तीसरे प्रकार को मर्टन ने संदर्भ प्रतिमानों, आदर्शों, मूल्यों को रखा है। संदर्भ समूह में जब व्यक्ति किसी भी संदर्भित व्यक्ति, भूमिका प्रारुप या समूह के आदर्शों, मानदण्डों मूल्यों को अपनाते या विरोध करते है तो वे सकारात्मक या नकारात्मक रुप में संदर्भ समूह व्यवहार करते है।

Scanned with CamScanner

संदर्भ समूह व्यवहार के प्रकार्यात्मक एवं दुष्प्रकार्यात्मक पक्ष

मर्टन ने संदर्भ समूह व्यवहार को अनेक रूप में व्यक्ति, समूह तथा समाज के लिए प्रकार्यात्मक माना। दोनों ही रूपों में प्रकट एवं अप्रकट। विशेष रूप से मर्टन ने सामाजिक गतिशीलता व प्रत्याशित समाजीकरण के संदर्भ में मर्टन ने संदर्भ समूह व्यवहार के प्रकार्यात्मक परिणामों की विवेचना की है। आगे चलकर अनेक अध्ययनों में यह स्थापित हुआ कि सामाजिक गतिशीलता हेतु संदर्भ समूह व्यवहार एक महत्वपूर्ण तत्व है। पुर्तगीकरण, उदग्र गतिशीलता एवं संस्कृतीकरण जैसी प्रक्रियाओं में संदर्भ समूह व्यवहार न केवल आधुनिक बल्कि पारम्परिक समाजों में भी गतिशीलता का आधार रहा है।

प्रत्याशित समाजीकरण - मर्टन ने प्रत्याशित समाजीकरण को संदर्भ समूह व्यवहार का महत्वपूर्ण प्रकार्य माना है। उनके अनुसार प्रत्याशित समाजीकरण का अभिप्राय पुनर्समाजीकरण की एक ऐसी प्रक्रिया से है जिसके अंतर्गत कोई व्यक्ति किसी असदस्यता वाले समूह के नियमों, आदर्शों, मूल्यों, प्रतिमानों तथा व्यवहार करने के तरीकों को सीखता है।

मर्टन ने इस संदर्भ में The American Soldiar के अध्ययन का उदाहरण दिया जिसमे यह पाया गया है कि Junior commission officers, commissioned officers के व्यवहार के तरीकों व प्रतिमानों का अनुकरण करते हैं। और अपने को एक कमीशंड आफिसर्स के रूप में प्रत्याशित समाजीकरण करते है।

मर्टन ने इस संदर्भ दोनों पक्षों यथा प्रकार्यात्मक एवं दुष्प्रकार्यात्मक का ~~अ~~ विवेचन किया है।

प्रत्याशित समाजीकरण एक तरफ तो ऐसे फौजी अधिकारियों को विकसित कर देता है जो पदोन्नति के पश्चात अपने को असमान से नवीन समूह के मूल्यों, मानदंडों को समायोजित कर अपने को उसी के अनुरूप ढाल लेते है। लेकिन दूसरी ओर जो व्यक्ति पदोन्नति नहीं पाते है वे एक तरफ तो असदस्यता समूह के द्वारा अस्वीकार किये जाते रहते हैं, अर्थात उसमे शामिल नहीं हो पाते तथा साथ ही साथ असदस्यता वाले समूह से मूल प्रतिमानों आदि को ग्रहण करने या पृथक होने के कारण सदस्यता समूह के द्वारा भी अस्वीकार किये जाते है। इसलिये वे सीमांत मानव (Marginal man) बनकर रह जाते है। मर्टन के अनुसार यही व्यक्ति अप्रतिमानता की ओर विचलित होने की अत्यधिक संभावना रखते है।

एवं सामाजिक अनुकूलन में कमी उत्पन्न करते है। जो संदर्भ समूह व्यवहार का दु० प्रकार्यात्मक पक्ष है।
इस प्रकार मर्टन ने संदर्भ समूह व्यवहार का एक मध्य सीमा -वर्ती सिद्धान्त अपने प्रकार्यात्मक प्रारूप के अनुरूप प्रस्तावित करने का प्रयास किया
वस्तुतः समाजशास्त्र में यह सिद्धान्त अनेक अध्ययनों का प्रस्थान बिंदु बना। सर्वहाराकरण, बुर्जुआकरण, संस्कृतिकरण, सार्वभौमीकरण स्थानीयकरण, पश्चिमीकरण, परिसंस्कृतिकरण, इत्यादि जैसी अवधारणाओं एवं महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय संकल्पनाओं का आधार बना।

Scanned with CamScanner